PAGE NO.:
DATE: 20/7/2020

* ज्ञान की आवश्यकता एवं महत्व :-

ज्ञान के अभाव में बालक का सम्पूर्ण विकास अवरुद्ध हो जाता है।
हम निम्न बिन्दुओं पर ज्ञान की आवश्यकता एवं महत्व को समझ सकते हैं।

(1) चरित्र के निर्माण हेतु → चरित्र निर्माण हेतु यह आवश्यक है कि मनुष्य को नैतिक - अनैतिक, सत्य - असत्य का ज्ञान होना आवश्यक है। जिसके लिए विभिन्न प्रकार की नैतिक शिक्षा संबंधि पुस्तकों का अध्ययन कराया जाता है। जिसके लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है।

(2) व्यवसायिक विकास हेतु → व्यवसायिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षक द्वारा छात्रों को कौशलात्मक ज्ञान प्रदान किया जाये। जिससे वह एक उचित व्यवसाय का चयन कर सके। इसी व्यवसाय के आधार पर फिर उसे संबंधित कौशल का विकास कराएं।

(3) उच्च जीवन स्तर के लिए → सामाजिक रूप से जीवन स्तर का संबंध कहीं न कहीं आर्थिक रूप से भी होता है नैतिक तथा आर्थिक विकास हेतु हमें ज्ञान की

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

अत्यंत आवश्यकता होती है सामान्य जीविकोपार्जन के पर्याप्त संसाधन होते हुए भी व्यक्ति का जीवनस्तर ऊँचा होता है

(4) शारिरिक विकास के लिए :→ जिस प्रकार ज्ञान के माध्यम से हम मानसिक विकास को प्राप्त करते है ठीक उसी प्रकार शारीरिक विकास भी आवश्यक है विद्यालय में खेल तथा उससे संबंधित शारीरिक क्रियाओं का आयोजन किया जाए तथा ज्ञान के माध्यम से शिक्षक यह जानकारी रखे और प्रदान करें कि विभिन्न स्तरों पर विभिन्न खेलों को किस प्रकार स्थान मिलना चाहिए।

(5) समायोजन क्षमता हेतु → व्यक्ति को अपने सम्पूर्ण विकास हेतु कहीं - न - कहीं समायोजन करना पड़ता है। बिना समायोजन क्षमता के इस विशाल संसार में व्यक्ति का आधार ही खतरे मे पड़ जाता है ज्ञान के आधार पर ही बालक के विभिन्न व्यवहारों का पता चलता है

16/5-20

* ज्ञान के स्रोत :- (Sourse of Knowlge

ज्ञान प्रत्यक्ष के मूल रूप से पाँच स्त्रोत है

PAGE NO.:
DATE: 22/7/2020

(1) इन्द्रिय अनुभव → ज्ञान का एक प्रमुख साधन इन्द्रियों द्वारा प्राप्त अनुभव का प्रत्यक्षीकरण है ऐसे ज्ञान को को प्रत्यक्ष ज्ञान कहा जाता है। मनुष्य की पांच ज्ञानेन्द्रिया आँख, कान, नाक, त्वचा, जीभ है।

(2) साक्ष्य → जब हम दूसरों के अनुभव तथा निरीक्षण पर आधारित ज्ञान को मान्यता देते है तो उसे हम साक्ष्य कहते है इस प्रकार साक्ष्य दूसरो के ज्ञान पर आधारित ज्ञान है। साक्ष्य में व्यक्ति स्वयं निरीक्षण नही करता है।

(3) तार्किक चिंतन → तार्किक चिंतन ऐसी मानसिक प्रक्रियाओं या योग्यता है जिसके बीना प्राय: ज्ञान अधुरा रहता है। हमें अनुभव द्वारा जो संवेदनाएं प्राप्त होती है उनको तर्क द्वारा संगठित कर के ज्ञान का निर्माण किया जाता है। उदाहरण के लिए इन्द्रियों से प्राप्त अनुभव रंग, स्वाद तथा गंध आदि से संबंधित कुछ संवेदनाएं हम प्राप्त कर लेते है परन्तु जब वस्तुओं में भेद करने का प्रश्न आता है वहां हमें तार्किकता की आवश्यकता होती है

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE NO. :
DATE : 24 7 20

अतः ज्ञान का आधार तर्कबुद्धि है।

(4) अन्तः प्रज्ञावाद तथा अन्तः प्रज्ञावाद → यह भी ज्ञान प्राप्ति का मुख्य स्त्रोत है। एवं एक प्रकार का आन्तरिक होता है।

अतः इससे यह तात्पर्य है कि किसी तथ्य को अपने मन में जानना क्योंकि इसके अन्दर अचानक ज्ञान के प्रकाश के किरण उत्पन्न होती है, जिसे हम ज्ञान की संज्ञा देते हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि अतः प्रज्ञा हमारे अन्दर निहीत वह क्षमता है जो कभी अचानक ही क्रियाशील होकर हमें आलोकित करती है।

(5) अधिकारिक ज्ञान → उच्च शिक्षित व्यक्तियों द्वारा प्रदत्त ज्ञान को सत्ता अधिकारिक ज्ञान की संज्ञा दी जा सकती है। व्यक्तिगत भिन्नताओं को आधार पर कुछ मनुष्य अत्यंत प्रतिभाशाली होते है जिनकी संख्या कम होती है। इनके द्वारा दिया गया ज्ञान पाठ्यक्रम में प्रदर्शित

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

होता है।

अतः इन महान व्यक्तियों को सत्य माना जाना चाहिए। इस तथ्य मे यही कमी है कि इनके द्वारा प्रदान किये गये ज्ञान के प्रति हमें अंधविश्वास नही होना चाहिए। जिससे हमारा ज्ञान संकीर्ण हो जाएं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

PAGE NO. :
DATE : / /

TOPIC :- सुचना :—

सुचना एक प्रकार का तथ्य है, जो किसी भी माध्यम अर्थात पुस्तक, सामाचार - पत्र, किसी व्यक्ति, अथवा मिडिया आदि द्वारा भी प्राप्त होती है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner